आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026

Received: 02/10/2026; Revised: 05/10/2026; Accepted: 05/10/2026; Published: 10/10/2026

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के कथा साहित्य में राजनीतिक यथार्थ

डॉ. विनयकुमार सुदामदेव चैधरी

असोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर

जि धाराशिव, महाराष्ट्र।

drvinays71@gmail.com

मो. 09423342418

डॉ. विनयकुमार सुदामदेव चैधरी, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के कथा साहित्य में राजनीतिक यथार्थ, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026**,(331 -335)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23924752

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

विपन्न ब्राह्मण पुजारी बैजनाथ व जयकली पांडे के परिवार में 29 दिसंबर, 1900 ई. में चुनार जिला मिर्जापुर में पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'का जन्म हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य के निबंधकार, गद्यकार, आलोचक, नाटककार, कवि, पत्रकार और प्रकाशक ने औपचारिक शिक्षा के अभाव में भी अपने साहित्य में जिस मौलिक प्रतिभा, चिंतन और सौंदर्य दृष्टि का परिचय दिया है, वह सराहनीय है। अभाव और अभिशाप की छाया में पले-पढ़े उग्र जी ने अपनी साहित्य साधना के बल पर हिंदी साहित्य में अपना योगदान देते रहे। उनका जीवन अभावग्रस्त, एकाकी और संघर्षपूर्ण रहा। उग्र जी का देहावसान 23 मार्च, 1967 को दिल्ली में हुआ।

एक तो नाम में 'उग्र' साहित्य में विद्रोह और साहित्य जगत में घासलेटी साहित्य का धब्बा! घर के हालात विपन्न, समाज में उपेक्षित लेकिन विचार और प्रतिभा के धनी ! नियत के साफ, मददगारी में हरिश्चंद्र, लेनदेन में कर्ण। बावजूद इसके साहित्य विधा में हरफनमौला! उग्र जी ने लगभग 150 कहानियों का लेखन किया है, जो 'ऐसी होली खेलो लाल', 'मुक्ता', 'काल कोठरी', 'यह कंचन सी काया', 'चित्र-विचित्र' और 'पोली इमारत' नामक कहानी संग्रहों में विभाजित है। पं. विनोदशंकर व्यास उग्र जी की कहानियों के बारे में लिखते हैं "तीसरा स्कूल 'उग्र' स्कूल है, किंतु इस स्कूल के नायक अकेले उग्र जी ही हैं। भाषा, शैली, कल्पना, आकर्षण सबकुछ उनका अनोखा है। राजनैतिक मौलिक कहानियाँ तो उनके शिवाय हिंदी साहित्य में किसी ने भी लिखी ही नहीं है। 'चिनगारियाँ' इसका उज्ज्वल उदाहरण है। एक कहानी पढ़कर तबियत फडक उठती है, लिखने का ढंग उनका बड़ा मनमोहक होता है।"[1]

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रेमचंद युग के प्रगतिवादी उपन्यासकार रहे हैं। उनके उपन्यासों में देश और समाज की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन हुआ है। उन्होंने युगीन राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का यथोचित वर्णन उपन्यासों में किया है। उग्र एक सफल व श्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप में हिंदी साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हुए। 'चंद हसीनों के खुतूत', 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुआ की बेटी', 'शराबी', 'सरकार तुम्हारी आँखों में', घंटा,जी जी जी,कढ़ी में कोयला, फागुन के दिन चार, जुहू, गंगामाता, सब्जबाग आदि 13 उपन्यास लिखे। उग्र जी के उपन्यासों के बारे में सुधाकर पांडेय का मत दृष्टव्य है "सामाजिक उपन्यास लिखने वालों में अत्यंत ख्याति उग्र जी को प्राप्त हुई। वासनाजन्य काम का आकर्षण तथा समाज में व्याप्त तत्संबंधी विकृतियों के अतिशय यथार्थ चित्र उन्होंने उपस्थित किए, जो लोगों को प्रिय भी लगे।'चंद हसीनों के खुतूत' और 'दिल्ली का दलाल' अत्यंत प्रिय हुए। यद्यपि उनपर अश्लीलता का दोष लगाया गया फिर भी शैली और कथा कहने का ढंग तथा प्रतिभा का जितना सुंदर संयोग उग्र जी में उस समय की उनकी रचनाओं में दिखता है, उतना अन्य किसी व्यक्ति में नहीं।"[2]

प्राचीन भारत में एकता होने पर भी भारतवर्ष छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित रहा था। अनेक गतिशील शासकों ने इसमें एकता लाने का प्रयास किया, लेकिन केंद्रीय शासन की कमजोरी के कारण सब विफल हो जाता था। आपसी कलह, निरंतर गृहयुद्धों एवं षडयंत्र के कारण भारत लगातार खंड-खंड होता रहा। अंग्रेजों के आगमन से भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना ने करवट ली। अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण ही भारतीयों में एकता की भावना ने जन्म लिया। छोटे-छोटे राज्यों के राजाओं ने अपनी राज-काज के लिए जो नीति बनाई, उससे राजनीति शब्द का प्रचलन हुआ, जो अंग्रेजी के 'पोलिटिक्स' शब्द का पर्यायवाची है। यह यूनानी भाषा के 'पोलिस' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है नगर अथवा राज्य। राज्यों से संबंधित विषय राजनीति में सभी प्रकार की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और नैतिक समस्याएँ शामिल होती थी। कालांतर में संसार के प्रत्येक विषय के वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन की ओर झुकने के कारण राज्य से संबंधित विषयों का अध्ययन राजनीति शास्त्र कहा जाने लगा। अतः व्यक्ति की सरकार से कार्य एवं

गतिविधियाँ ही राजनीति का स्वरूप धारण करती है, जिससे वह समाज की समस्याओं का निवारण करता है। ईस्टन लिखते हैं" "वे समस्त प्रकार की गतिविधियाँ राजनीति हैं, जो सामाजिक नीति के निर्माण और क्रियान्वयन में अंतग्रस्त होती हैं।"[3]

राजनीति और समाज का अटूट संबंध है। दोनों प्रारंभ से ही एक-दूसरे से प्रभावित होते रहे हैं। इसलिए जिस देश में जो राजनीतिक घटनाएँ घटती हैं, उससे वहाँ का समाज प्रभावित होता है। साहित्यकार भी समाज का अंग है, क्योंकि वही देश-दुनिया और समाज में घटित होने वाली घटनाओं को अपना विषय बनाता है। जोगिन्द्रसिंह वर्मा का कथन है कि "विभिन्न राजनीतिक पहलुओं का आमना-सामना किए बिना साहित्यकार सुगम जीवन को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने में असमर्थ रहता है।"[4] इसलिए समाज, राजनीति और साहित्य का त्रिकोणात्मक संबंध है।

ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपने व्यापार फैलाने के उद्देश्य को लेकर आई थी। धीरे-धीरे उन्होंने भारत के कुछ प्रांतों को अपने कब्जे में कर लिया और यहीं से कंपनी के परिवर्तनों के साथ जब भारतीय जनता अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई और अपने अधिकारों के लिए विद्रोह करने लगी तो ब्रिटिश सरकार जनता पर अत्याचारों का कहर ढाने लगी। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने अपने कथा-साहित्य में इस क्रुरतापूर्ण शासन का वर्णन किया है। भारतीय आंदोलन असफल करने के लिए अंग्रेज सरकार ने दानवता का व्यवहार किया। जलियाँवाला बाग में सैकड़ों लोगों को आततायी जनरल डायर की मशीन गनों से भून दिए गए। 'फागुन के दिन चार' उपन्यास में एक साधु-वेशी वालंटियर पात्र का इस संदर्भ में कथन है कि "सज्जनों, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! हिंदुस्तान की आबादी 28 करोड़, जिसमें से जलियाँवाला बाग में सैकड़ों लोगों को आततायी जनरल डायर की मशीन गनों से भून दिया गया। इस क्रुर कर्म का कुफल यह हुआ कि 36 कोस पृथ्वी नीचे और 36 कोस आकाश ऊपर लाल-लाल हो गया।"[5] भारतीय जनता अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयास करती थी तो ब्रिटिश सरकार अपने अस्तित्व को डूबने से बचाने के लिए आंदोलन को विफल करने के लिए प्रयासरत थी।

ब्रिटिश सरकार का काम कहर ढोने का था, वो तो बाहर के थे।लेकिन जनता के रखवाले पुलिस ही घर का भेदी थी। पुलिस की क्रुरता और पशुता का चित्रण 'कढ़ी में कोयला' उपन्यास दिखाई देता हैं। आम जनता दोनों के चपेट में त्रस्त थी। जनता की पुलिस के प्रति यह धारणा है कि "गरीबों को चुसकर सेना के नाम पर पाले गए पशुओं को शराब, कबाब से मोटा ताजा रखती है यह सरकार । धीरे-धीरे देश का धर्म, प्राण और धन चूसती चली जा रही है। यह लूटक शासन प्रणाली है।"[6] आधुनिक समय में राजनेताओं के लिए राजनीति स्वार्थपूर्ति का साधन बन उनके हाथों की कठपुतली बन गई है। सत्ता की प्राप्ति होते ही नेता लोग गिरगिट की तरह रंग बदलते हुए जनता को मूर्ख बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लग जाते हैं। उग्र जी की 'न्यूजरील' कहानी में एक नेता एक मदारी को अपना कहा न मानने पर गाली-गलौच करता है कि "तैयार नहीं मेरा आर्डर मानने को, जिससे कमिश्नर काँपे, कलेक्टर थर्राएँ? अबे झाँपके झो....।"[7] एक दफा सरकार में सत्ता हासिल की तो खुद को राजा-महाराजा समझकर अनुचित कार्य भी उसे उचित लगने लगता

है। "राजा अन्याय कभी कर ही नहीं सकता। राजा प्रजा से जैसे चाहे वैसे अपनी प्रसन्नता के लिए जो चाहे कर सकता है।"[8] अपने स्वार्थ एवं सत्ता के मद में अंधे होकर नेता अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते जिससे देश अवनति की तरफ अग्रसर होने लगता है। 'नेता का स्थान' कहानी में नेता सत्ताधीश होकर जनता पर भड़क उठता है कि "चुप रहो, राजनीति में सदा एकमत नही रहता। उस वक्त मंत्रित्व से दूर रहने की आवश्यकता थी, आज स्वीकृत करने की आवश्यकता है। तुम मूर्ख हो, राजनीति क्या जानो।"[9]

समाज में सभी मनुष्य समान हैं। छुआछूत समाज में मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, जो मनुष्य को उसके मनुष्यत्व रूपी गरिमा से गिराकर पशुत्व के गंदे गड्ढे में गिरा देता है। जातीय ऊँच-नीच के कारण समाज के व्यक्ति के साथ अधार्मिक, अनैतिक, अतार्किक और अमानवीय व्यवहार करना मनुष्यता के विरुद्ध जघन्य कार्य है। 'मनुष्यानंद' उपन्यास में नायक मनुष्यानंद बनारस के हरिजनों में जागृति की लहर उत्पन्न करता है। वह अछूतों को अपनी दुर्बलताओं को छोड़कर एक होने का उपदेश देता है "अगर तुम अछूत अपनी कमजोरियों को दूर कर एक हो जाओ, तो तुम भी संसार के अच्छे से अच्छे लोगों में आदर पाने लायक हो सकते हो। तुम अछूत बने हो अपनी लापरवाही से! नहाते तुम नहीं, अपने शरीर को धोते तुम नहीं, हमेशा गंदगी से लिपटे रहते हो ऐसी हालत में रहने वाले समाज को अछूत ही समझा जाएगा।"[10]

राजनीति समाज का महत्वपूर्ण अंग है, परंतु जीवन का अंतिम उद्देश्य कदापि नहीं। हमारे वर्तमान संकट की कारुणिक स्थिति और दर्दनाक परिणामों में राजनीतिक स्थिति ही प्रवाहमान है। निराशा, कड़वाहट, पारिवारिक विघटन, गहराता असंतोष, बढ़ती निराशा, टूटते मानवीय मूल्य जैसे जीवन प्रश्नों को उग्र जी ने साहित्य के माध्यम से उठाया है। आजकल भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन चुका है। 'जल्लाद' कहानी का रामस्वरूप कहता है "फाँसी की सजा पाने वालों से तो नहीं, पर बेंत खानेवाले से सुविधानुसार मैं रिश्वत भी खाता हूँ।"[11] 'उरूज' कहानी का पात्र भ्रष्टाचार को पाप समझता है, पर करता बेझिझक है "आज की राजनीति में पाप करना बुरा नहीं, पकड़ा जाना मात्र बुरा है! बुराई-बुरी नहीं बदनामी बुरी है।"[12] इस प्रकार अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए समाज की इच्छा का गला घोंट देना भ्रष्टाचार ही है। और जो व्यक्ति सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से समाज के हितैषी हैं, उनको ये लोग आगे आने नहीं देते। राजनीतिक भ्रष्टाचार आज की सबसे बड़ी ज्वलंत समस्या है, जिसके कारण गुण, कुशलता एवं योग्यता का समाज से नाम मिट गया है। समाज का प्रत्येक कार्य आज योग्यता के स्थान पर चापलूसी एवं उपहारों के दम पर हो रहा है। इसके कारण ईमानदार एवं कर्मनिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता अपना कार्य सही एवं नियमित ढंग से नहीं कर पाते हैं।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने अपने कथा साहित्य में राजनीतिक परिवेश का चित्रण विस्तार से किया है। मानव जीवन से संबंधित प्रत्येक राजनीतिक घटनाओं का चित्रण लेखक ने किया है। 'ईस्ट इंडिया कंपनी की स्वार्थांधता को 'फागुन के दिन चार' उपन्यास में क्रांतिकारियों के आंदोलन के दमन, 'गंगामाता' उपन्यास की सौभाग्य सुंदरी अग्रवाल, 'रेन ऑफ टेरर' कहानी में एक ब्राह्मण को गोरे द्वारा पीटने,

'नादिरशाही' कहानी में अंग्रेजी सिपाहियों की क्रुरता एवं बर्बरता, भारत की सोई हुई चेतना को जगाने के लिए लेखक ने रूसी जारशाही की क्रुरता के विरुद्ध विद्रोह को 'सरकार तुम्हारी आँखों में' उपन्यास के पात्र ऑस्ट्रियन प्रोफेसर, 'पागल' कहानी के पात्र गिलिंस्की एवं स्मरनोफ, 'भीषण संतोष' कहानी के पात्र ड्रेडस्की, 'निहिलिस्ट' के पात्र श्रंेगरिफ आदि पात्रों के माध्यम से दर्शाया है। समाज में फैली छुआछूत की समस्या को लेखक ने 'मनुष्यानंद' उपन्यास के पात्र मनुष्यानंद के सहारे अछूतोद्धार आंदोलन एवं 'समाज के चरण' कहानी के पात्र योगानंद के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है।

राजनीति राष्ट्र का अभिन्न अंग है। उसका उपजीव्य समाज में अंतर्निहित भावनाएँ एवं धारणाएँ होती हैं, किंतु वर्तमान समय की 'मैं-मेरा', 'हम-हमारा' के भाव ने समाज की धारणाएँ पीछे छूट गई हैं। लेखक ने अपने कथा साहित्य में राजनीतिक आंदोलनों एवं नेताओं की स्वार्थलिप्सा से हो रहे देश के नुकसान को चित्रित किया वही युवा शक्ति द्वारा इस गंदली राजनीति के विरोध को भी स्पष्ट किया है।

संदर्भ संकेतः

1. डॉ. रत्नाकर पांडेय, उग्र और उनका साहित्य, भाग-1, पृ. 101।
2. सुधाकर पांडेय, हिंदी साहित्य और साहित्यकार, पृ. 132।
3. ईस्टन, ए फ्रेमवर्क फॉर पॉलिटिक्स ऑफ एनालिसिस, पृ. 134।
4. जोगेन्द्र सिंह वर्मा, दस्तावेज, पृ. 80।
5. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', फागुन के दिन चार, पृ. 47।
6. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', कढ़ी में कोयला, पृ. 52।
7. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', श्रेष्ठ रचनाएँ भाग 01- कहानीः न्यूजरील, पृ.238।
8. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', सरकार तुम्हारी आँखों में, पृ. 78।
9. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', श्रेष्ठ रचनाएँ भाग 02 कहानीः नेता का स्थान, पृ. 147।
10. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', मनुष्यानंद (बुधुआ की बेटी), पृ. 144 ।
11. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', श्रेष्ठ रचनाएँ भाग 01, कहानीः जल्लाद, पृ. 46।
12. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', श्रेष्ठ रचनाएँ भाग 01, कहानीः उरूज, पृ.17।

****